ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 दिसम्बर 2020
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२१
युगाब्द-५१२१, अंक-१३३, वर्ष-१३
मार्गशीर्ष विक्रमी २०७७ (दिसम्बर 2020)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे। शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥ –ऋ० १। ६। ३२। ३

व्याख्यान–हे मनुष्यो! वह परमात्मा कैसा है कि हम लोग उसकी स्तुति करें ? हे (अग्ने) परमेश्वर! आप (देवः देवानामसि) देवों (परमविद्वानों के भी देव) परमविद्वान् हो, तथा उनको परमानन्द देनेवाले हो। तथा ([मित्रः] अद्भुतः) अत्यन्त आश्चर्यरूप मित्र, सर्वसुखकारक, सब के सखा हो। (वसुर्वसूनामसि) पृथिव्यादि वसुओं के भी वास करानेवाले हो। तथा (अध्वरे) ज्ञानादि यज्ञ में (चारुः) अत्यन्त शोभायमान और शोभा के देनेवाले हो। हे परमात्मन्! (सप्रथस्तमे सख्ये शर्मन् तव) आपके अतिविस्तीर्ण, आनन्दस्वरूप, सखाओं के कर्म में हम लोग स्थिर हों, जिससे हमको कभी दुःख प्राप्त न हो। और आपके अनुग्रह से हम लोग [(मा रिषामा)] परस्पर अप्रीतियुक्त कभी न हों। ।।

सम्पादकीय

किसान का संघर्ष

कृषि सदा से ही संसार भर में मनुष्यों की जीविका, समुदाय के भरण-पोषण और वर्तमान में भी सारे व्यवसाय का आधार रहा है। कृषि उत्पाद मानव जीवन की मूल आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और यह भी है कि कृषक को प्रकृति से सीधा-सीधा जुड़ना होता है। अतः प्राकृतिक आपदाओं की मार भी कृषक को ही सबसे अधिक झेलनी पड़ती है। इन सब आपदाओं को झेलते हुए, सभी प्रकार के कष्ट सहते हुए भी वह उसी, कार्य में लगा रहता है। पूरी अर्थव्यवस्था या यूँ कहें कि मानव की सभी क्रियाओं का व्यापारीकरण हो जाने के बाद तो घाटा उठाते हुए भी एक किसान अपने कार्य को करता जा रहा है या करना पड़ रहा है।

किसान व्यापारी नहीं है, वह उत्पादक है। वह कृषि उपज पैदा करता है। उसके लिए अपना खून पसीना लगाता है, दिन-रात हर प्रकार के कष्ट सहते हुए भी, अपने कार्य करता है। किसान के लिए समस्या पैदा तब होती है जब सरकारें उसके कार्य को एक व्यापार मानकर उसकी समस्याओं का निदान करने का प्रयास करती हैं। व्यापारी भी ऐसा मानती हैं कि जिसका कोई संगठन नहीं है, प्रतिनिधि नहीं है। यही राजनेता उसके प्रतिनिधि बन जाते हैं। उसकी आवाज उठाने वाले उन्हीं सत्ताधीशों के बीच से होते हैं और उसके हर मुद्दे का राजनीतिकरण कर दिया जाता है।

एक और जहाँ सरकार का दृष्टिकोण किसान की समस्या को अपने दृष्टिकोण से देखना है जो कि एक व्यापारिक दृष्टिकोण है, दूसरी और उनकी समस्याओं का समाधान करते हुए उनसे किसी प्रकार का परामर्श न लेना, विश्वास में न लेना भी एक समस्या पैदा करता है।

वर्तमान में चल रहे किसान आन्दोलन के पीछे भी यह एक बहुत बड़ा कारण है। सरकार के द्वारा कानून पास कर दिए गए, किसानों की समस्याओं को सुने बिना, उनको विश्वास में लिए बिना। और जब किसान आन्दोलन पर उतरे, अपनी बात सरकार तक पहुँचाने का प्रयास किया तो सत्ताधारी पार्टी का आई.टी. सैल किस प्रकार आन्दोलन को बदनाम करने पर उतर आया और किस बेशर्मी से सरकार की कमियों को भी उसकी विशेषता बताकर प्रस्तुत करने लगा उसका उदाहरण कम ही देखने को मिलता है। उनका कार्य तो केवल सत्ताधारियों के हित की पूर्ति करते रहने का हो गया है न कि सामाजिक समस्याओं को सही रूप से सोशियल मिडिया के सामने रखना। वहीं दूसरी और ऐसे-ऐसे लोग आन्दोलन में पहुंचने लगे, जिनका आन्दोलन से, किसानों से, उनकी समस्याओं से कोई लेना देना नहीं। कुछ राष्ट्र विरोधी ताकते जैसे-टुकड़े-टुकड़े गैंग के सदस्य, दलितों के तथाकथित हिमायती जहाँ भी मण्डप सजा देखते हैं वहीं पत्तल लेने पहुँच जाते हैं। इन्होंने यहाँ भी यही किया है।

किसान को भीख नहीं चाहिए, वह किसी पर बोझ भी नहीं बनना चाहता। आत्मस्वाभिमान से जीने वाला है किसान। न सरकार की सब्सिडी चाहिए, वह तो जो उसने उपज पैदा की है, उसकी लागत मिल जाए यही चाहता है, उसे बहुत भारी मुनाफा भी नहीं चाहिए, बस घाटे से उसे बचा लिया जाए यही उसकी आकांक्षा है। वह मेहनत करके पूरे देश के नागरिकों को अन्न की

शेष अगले पृष्ठ पर ....

पिछले पृष्ठ का शेष .... आपूर्ति करता है, देश के उद्योग-धन्धों के लिए कच्चा माल उपलब्ध करवाता है, अनेक निर्यातकों को निर्यात के लिए सामान उपलब्ध करवाता है। किस प्रकार से संगठित व्यापारी किसान का शोषण करते हैं और अपने लाभ को बढ़ाते जाते हैं इसको एक उदाहरण से स्पष्ट समझा जा सकता है। पिछले कई वर्षों से धान की कीमत लगातार घट रही है। एक तिहाई रह गई है। लेकिन चावल की कीमत बाजार में इसी अवधि में कुछ न कुछ बढ़ी है। यह किसानों का ही तो शोषण है, जब बाजार में चावल पूर्व कीमत पर बिक रहा है तो किसान को उसकी उपज की पूर्व कीमत देने में क्या समस्या है?

यही तो किसान चाहता है कि उसकी फसल की लागत तो मिले। किसान की उपज मूल आवश्यकतओं को पूरा करने वाली है, उसको रोका भी नहीं जा सकता है। अतः किसान को उसकी उपज का पूरा दाम मिलना ही चाहिए। यही किसान चाहता है और यही उसकी समस्या का समाधान है। उसको कृषि कार्य करना ही है, वह उसके लिए आवश्यक तो है ही अपितु पूरे राष्ट्र के लिए जीवनदायी है। इसीलिए किसान को वैदिक परम्परा में राजा माना गया है। वह समाज की जीवन शक्ति है।

अतः सरकार को चाहिए कि अपना अहंकारी रवैया छोड़े, किसानों की समस्याओं को सुने और उन्हें कृषि उपज का पूरा दाम देने की पूर्ण व्यवस्था करे। और यह व्यवस्था भी केवल एक दो फसल के लिए न हो अपितु सभी क्षेत्रों में सभी फसलों व सभी किसानों के लिए हो। जब कोई राष्ट्र अपने किसानों द्वारा पैदा किए उस अन्न की कीमत चुकाने में भी असमर्थता प्रकट करता है जो उसके पूरे राष्ट्र के लोगों के लिए जीवन प्रदान करता है तो फिर राष्ट्र की उन्नति किसके लिए और कैसे? न्यूनतम समर्थन मूल्य देने में यह कहकर असमर्थता प्रकट करना कि पिछले सत्तर वर्षों से गारण्टी नहीं दी गई अब कैसे दी जा सकती है, एक बहुत ही बचकाना तर्क है। सत्तर वर्षों से अन्याय हो रहा है तो क्या अब भी होते रहना चाहिए? यह अन्याय समाप्त हो किसान का सम्मान हो, तभी राष्ट्र उन्नति के पथ पर सही रूप से बढ़ सकता है।

आज का प्रश्न

- आचार्य धर्मपाल, कुरुक्षेत्र

प्रश्न :- महर्षि दयानंद का आर्य समाज आज तक कहां खड़ा है ?

उत्तर :- शिक्षित जनों की ओर से शंका होती है कि आर्य समाज कहां से प्रारंभ होकर कहां तक पहुंचा है? उनका कहना है आर्य समाज वास्तव में एक बुद्धि जीवी व्यक्तियों का राष्ट्रवादी संगठन है, राष्ट्र के प्रति मर मिटने का भाव रखने वाले व्यक्तियों का संगठन है और इस भाव का आधार वैदिक विचारधारा ही है।

महर्षि के पश्चात आर्य समाज ने अरबों रुपया विभिन्न मदों पर, मार्ग व्यय पर, शतकुंडी हवनों पर, शोभा यात्राओं पर, हजारों विद्वानों के भाषणों पर, नेताओं के स्वागत में सिमटने वाले गुरुकुलों के बड़े-बड़े कार्यक्रमों पर पारित हजारों प्रस्तावों का खर्च, किन्तु परिणाम क्या निकला? आर्य समाज 1875 में जहां था वहीं सन् 2000 में खड़ा मिला।

ऐसा नहीं है कि पुरुषार्थ व भावनाएं उन्नति की ना हों परन्तु वे पुरुषार्थ व भावनाएं कहीं दिशाहीन ही रही या यूं कहें आर्य समाज के बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा उन्नति के मार्गों का मंथन करते हुए भी उपयुक्त मार्ग का अवलोकन न हो सका।

ऐसे में ईश्वर की कृपा से एक ऐसा मार्ग प्रशस्त हुआ, एक ऐसा दिव्य आत्मा जो आशा से निराशाओं में डगमगाती आर्य समाज रूपी नैया को स्थिरता प्रदान करते हुए लक्ष्य की ओर बढ़ाने में संकल्पित हुआ।

ऋषि के उपरांत इस सुप्त आर्य समाज में चेतना का संचार करने वाला चाहिए था। तारनहार की बाट जोहते इस आर्य समाज को पार कराने वाला कोई तो चाहिए ही था। फिर आर्य समाज को **आचार्य परमदेव मीमांसक जी** के रूप में तारनहार मिले और उन्होंने दयानन्दीय विचारधारा के मूल सिद्धांतों को सरल रूप में रखने का संकल्प लिया।

उन्हें ऐसा लगता था कि जनशक्ति का महापुंज आर्य समाज कहीं भीड़ में खो गया। जब उन्होंने घूम-घूम कर आर्य समाजों में प्रचार कार्य देखे तो उन्हें लगा कि आर्यों का प्रचार एक खेल और मनोरंजन बनकर रह गया है। उन्होंने बताया कि **भीड़ सूचक है संख्या की, ना कि शक्ति की और दयानंद शक्ति का प्रतीक है।**

इसलिए जो समाज अथवा व्यक्ति भीड़ का नहीं शक्ति का उपासक है वही दयानंद का अनुयाई हो सकता है। दयानंद का नाम जपकर, दयानंद के गीत गाकर, दयानंद के नाम पर भीड़ इकट्ठी करके, दयानंद के नाम पर शोभायात्रा निकालकर, दयानंद के नाम पर शिविर लगाकर हम श्रद्धा का तो परिचय दे सकते हैं किन्तु उस आस्था का नहीं जो समाज का, राष्ट्र का, विश्व का कायाकल्प कर दे। क्या दयानंद इतना औपचारिक हो गया है कि उसे प्रशंसा, गीतों से संतुष्ट रखा जाए? क्या दयानंद को केवल प्रदर्शनों से जीवित रखा जाए? दयानंद तो उस विद्रोह का नाम है जो कुरीतियों को और स्वार्थों को जड़ मूल से उखाड़ फेंक देता है।

उनकी इसी विचारधारा को स्वार्थों से दूर दयानंद के कुछ सिपाहियों ने समझा और उन्हीं सिपाहियों के अनुरोध पर एक सभा का गठन उस दिव्य आत्मा के कर कमलों से किया गया और नाम रखा गया **'राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा'**। देखते ही देखते इस सभा से दयानंद के सच्चे सिपाही जुड़ते चले गए।

जिस प्रकार दयानंद के आने पर पंडे पुजारियों में खलबली मच गई थी वैसे ही आर्य समाज में भी कुछ तथाकथित कर्महीन आर्यों में खलबली मचना स्वभाविक था। परंतु अनेक झंझावातों को पार करती यह सभा आर्य समाज की मूल शक्ति अर्थात् आर्यीकरण करती हुई निरंतर बढ़ती रही।

उन्हीं दिव्य आत्मा द्वारा आर्य समाज की अवनति का एक कारण और अनुभव के आधार पर हुआ कि जब हम कृषि के लिए भूमि तैयार करते हैं और उस भूमि में बीज बोया जाता है तो उस बीज से पौधे बनने लगते हैं। उन पौधों को बड़ी सावधानी से पाला जाता है; संरक्षण किया जाता है। परंतु उन पौधों के साथ-साथ बिना बोए ही खरपतवार भी उग आती है। चाहे-अनचाहे वह खरपतवार भी खाद पानी लेकर बढ़ती रहती है। ऐसे संगठन में भी सच्चे और निष्ठावान् आर्यों के निर्माण के साथ-साथ खरपतवार रूपी व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति लिए श्रद्धा व निष्ठा का चोला ओढ़े व्यक्ति भी पलने-बढ़ने लगते हैं और संगठन की ताकत को खा पीकर तगड़े हो संगठन से अलग हो स्वार्थ भरी विचारधारा के साथ आर्य विचारधारा का प्रचार करने लगते हैं और संगठन को कमजोर करने में लगे रहते हैं। इनमें कुछ खरपतवार पौधों के इतने समान रूप में होती है कि उनकी पहचान बहुत परखने के पश्चात ही हो पाती है।

अतः हे आर्यों एवं आर्याओं बड़े सौभाग्य से वैदिक विचारधारा को मजबूती से स्थापित करने वाले आचार्य हमें मिले हैं; इनकी उंगली पकड़कर चलते रहो, मन में संशय मत रखो।

विश्वास से एक बात जरूर निवेदन करूंगा- मैं बेशक उतना विद्वान नहीं हूँ पर विद्वान कौन है यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ, मैंने जीवन में इतना जरूर समझा है और जाना है।

वर्ण व्यवस्था: डॉ. अम्बेडकर बनाम वैदिक मत-६

-सोनू आर्य, हरसौला

सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास पृष्ठ- 111 पर महर्षि दयानन्द कहते हैं- शूद्र सब सेवाओं में चतुर, पाकविद्या में निपुण, आतिप्रेम से द्विजों की सेवा और उन्हीं से अपनी जीविका करे और द्विज लोग इसके खान-पान, वस्त्र, स्थान, विवाहादि में जो कुछ व्यय हो सब कुछ देवें अथवा मासिक कर देवें। डॉ. अम्बेडकर द्वारा उद्धृत अर्थशास्त्र के प्रमाण में स्पष्टत: शूद्र को स्व-उपार्जित धन वा पैतृक सम्पत्ति के अधिकार का प्रावधान किया तथा स्पष्ट शब्दों में महर्षि दयानन्द ने ऊपर वर्णित वस्तुएं अथवा मासिक कर देने का वर्णन किया है। अत: वैदिक वर्ण व्यवस्था पर आम्बेडकर की यह आपत्ति कितनी जायज है पाठकगण स्वयं विचार करें। किन्तु महाभारतकाल बाद की विकृत जन्माधारित वर्ण व्यवस्था जिसमें योग्य शूद्रों को भी पुश्तैनी सफाई आदि के कार्य करने पड़े, के सन्दर्भ में डॉ. अम्बेडकर की आपत्ति पूर्णत: उचित है तथा वैदिक मतानुधार्मियों की इस पर भी राय डॉ. आम्बेडकर से अभिन्न है।

यथासंभव आर्ष ग्रन्थों के प्रमाणों के आधार पर हमने डॉ. अम्बेडकर द्वारा उठाए गई आपत्तियों का विवेचन किया और यह भी जाना कि उक्त आपत्तियाँ विशुद्ध वैदिक वर्ण व्यवस्था पर न होकर विकृत जन्माधारित वर्ण व्यवस्था पर ही हैं, किन्तु फिर भी डॉ. अम्बेडकर जैसा बुद्धिमान, स्वाध्यायशील व्यक्ति अगर उक्त आपत्तियाँ उठाता है, तो कारण निश्चय ही बड़े दृढ़ होंगे।

प्रथम तो उन्होंने व्यवहारिक जीवन में जातिवाद व सामाजिक असमांजस्यता का जो दंश झेला, वह भारतीय समाज व्यवस्था का कटु यथार्थ हो इसका मूल उन्होंने प्राचीन ग्रन्थों में खोजने का प्रयत्न किया एवं उनके इस प्रयत्न का मूल आर्ष ग्रन्थों के विकृतिकरण में निहित है। अत: आर्ष ग्रन्थों में विकृतिकरण जो अन्तत: समाज व्यवस्था के विकृतिकरण के रूप में परिणत हुआ पर विचार/विवेचन आवश्यक है।

संस्कृत ग्रन्थों का विकृतिकरण- यह सर्वमान्य सत्य है कि समय के बहाव के साथ-साथ स्वार्थी लोग अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु किसी भी व्यवस्था में उस प्रकार की छेड़छाड़ का प्रयत्न करते ही हैं जिससे उनके स्वार्थों की पूर्ति सर्वोत्तम रूप में होती रहे। भारतीय ज्ञान व्यवस्था के साथ भी यह छेड़-छाड़ महाभारत काल बाद समय-समय पर विभिन्न स्वार्थों के कारण भिन्न-भिन्न समुदायों द्वारा की गई है। संस्कृत ग्रन्थों में विकृतिकरण को सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने न केवल जाना अपितु उनके शुद्धिकरण का भी प्रयत्न किया।

''सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास में ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि वेदों की अप्रवृत्ति के कारण महाभारत युद्ध हुआ। तदुपरान्त् जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया'' पेज-298 (एकादश समुल्लास) पर लिखते हैं- राजा भोज के राज्य में व्यास जी के नाम से मार्कण्डेय और शिवपुराण किसी ने बनाकर खड़ा किया था। उसका समाचार राजा भोज को होने से उन पण्डितों को हस्तछेदनादि दण्ड दिया और उनसे कहा कि जो कोई काव्यादि ग्रन्थ बनावे तो अपने नाम से बनावे, ऋषि-मुनियों के नाम से नहीं। यह बात राजा भोज के बनाए संजीवनी नाम इतिहास में लिखी है, जो ग्वालियर राज्य के भिण्ड नामक नगर के तिवाड़ी ब्राह्मण के घर में है .... उसमें स्पष्ट लिखा है कि व्यास जी ने 4400 और उनके शिष्यों ने 5600 श्लोक युक्त अर्थात् सब 10,000 श्लोकों के प्रमाण भारत बनाया था। वह महाराजा विक्रमादित्य के समय में 20,000, महाराजा भोज कहते हैं कि मेरे पिताजी के समय में 25,000 और अब मेरी आधी उम्र में 30,000 श्लोक युक्त महाभारत मिलता है।'' और वर्तमान में एक लाख से अधिक श्लोकों का महाभारत मिलता है। डॉ. अम्बेडकर ने भी शूद्र कौन पेज 79 जिसका वर्णन पहले कर चुके हैं, पर ऐसा ही माना है। विकृतिकरण का कारण सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास पेज-122 पर लिखे हैं- ''जैसे-ब्रह्मोवाच, वशिष्ठ उवाच, रामउवाच, शिव उवाच, विष्णु रूवाच इत्यादि श्रेष्ठों का नाम लिख के ग्रन्थ रचना इसलिए करते है कि सर्वमान्य के नाम से इन ग्रन्थों को सब संसार मान लेवे और हमारी पुष्कल जीविका भी हो। इसलिए अनर्थ गाथायुक्त ग्रन्थ बनाते हैं। कुछ-कुछ प्रक्षिप्त श्लोकों को छोड़ के मनुस्मृति ही वेदानुकूल है, अन्य स्मृति नहीं। ऐसे ही अन्य जालग्रन्थों की व्यवस्था भी समझ लो।'' इसी प्रकार 1000 वर्ष पुरानी हस्तलिखित रामायण से जो नेपाल के अभिलेखागार में सुरक्षित है, आज की रामायण में सैकड़ों श्लोक अधिक पाये जाते हैं। यही स्थिति मनुस्मृति की है। इसमें अधिक प्रक्षेप हुए हैं क्योंकि इसका सम्बन्ध मनुष्य के दैनिक आचार-व्यवहार व समाज व्यवस्था से था, अत: स्वार्थवश उतनी ही अधिक छेडछाड़ मनुस्मृति से की गई है। इसकी टीकाएं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। बाद-बाद की टीका में अधिक-अधिक श्लोक पाए जाते है। अंग्रेज शोधकर्त्ता बूलर, जे. जौली, कीथ, मैक्डानल, इन साइक्लोपीडियो के लेखक, भारतीय विद्वान-स्वामी विरजानन्द, महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, डॉ. राधाकृष्णन, रविन्द्रनाथ टैगोर तथा अन्य अनेक विद्वान न केवल मनुस्मृति अपितु संस्कृत सहित्य में विकृतिकरण पर एकमत हैं। ब्राह्मणों द्वारा विकृतिकरण का कारण ऋषि दयानन्द आजीविका का प्रबन्ध के उद्देश्य को मानते हैं।

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	14 दिसम्बर	दिन-सोमवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-ज्येष्ठा
पूर्णिमा	30 दिसम्बर	दिन-बुधवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-आर्द्रा
अमावस्या	13 जनवरी	दिन-बुधवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-उत्तराषाढ़ा
पूर्णिमा	28 जनवरी	दिन-गुरुवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-पुष्य

सहज सरल सांख्य-७

- आचार्य सतीश, दिल्ली

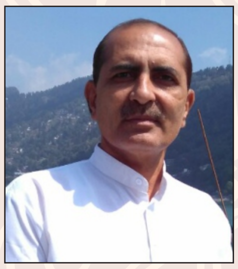

महत् जीवात्मा के लिए प्रत्येक भोगादि उपस्थित करने में मुख्य साधन अर्थात् करण है। महत् त्रिगुणात्मक प्रकृति से उत्पन्न होता है। कार्य होने के कारण महत् का भी प्रयोजन है।

अकार्य रूप दो ही तत्व हैं- पुरुष या प्रकृति। अब यदि महत् को कार्य न मानें तो महत् या तो पुरुष है या प्रकृति है। यदि महत् परिणामी तत्व है तो प्रकृति है और अपरिणामी है तो पुरुष है। लेकिन महत् पुरुष है नहीं क्योंकि वह चेतन है नहीं। महत् प्रकृति भी नहीं क्योंकि अनित्य है और अनित्य पदार्थ कार्य होता है।

अकार्य रूप में अर्थात् मूल रूप में प्रकृति और पुरुष के बिना अन्य किसी का अस्तित्व नहीं है जबकि महत् का अस्तित्व है। अत: वह कार्य रूप ही हो सकता है।

चूंकि महत् का अपने कारण मूल प्रकृति में समावेश होने से कार्य से कारण का अनुमान हो जाता है। मूल कारण निश्चित रूप से अव्यक्त होता है, तय परम्परा से महत् अन्तिम व्यक्त तत्व है। इसी से यह त्रिगुणात्मक व्यक्त अपने मूल त्रिगुणात्मक अव्यक्त का अनुमान कराता है। अत: प्रकृति के कार्य महत् आदि के द्वारा प्रकृति की सिद्धि हो जाने से उसका निषेद्ध नहीं किया जा सकता।

प्रत्येक चेतन व्यक्ति **''मैं हूँ''** इस रूप में आत्मा के अस्तित्व का अनुभव करता है। इसलिए इसकी स्वीकारोक्ति विवाद रहित है।

लेकिन सामान्यत: स्थूल शरीर और इन्द्रियों के साथ अहं का अनुभव करता है और शरीरादि को ही स्वयं (आत्मा) समझता है। इसलिए चेतनाचेतन विवेक के लिए आवश्यक है कि आत्मा की वास्तविक स्थिति को समझा जाए। अविवेक होते हुए भी वास्तविक स्थिति में स्थूल शरीर से लगाकर सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रकृति पर्यन्त जितना अचेतन जगत है उस सबसे अतिरिक्त है चेतन आत्मा।

यदि भोक्ता आत्मा न हो तो जगत् की प्रवृत्ति निष्फल है क्योंकि संघात रूप समस्त अचेतन तत्व परार्थ अर्थात् दूसरे के लिए है और वह दूसरा इससे विलक्षण (अलग) जीवात्मा ही है।

साथ ही त्रिगुणात्मक मूल उपादान तथा उसके समस्त परिणाम महदादि से विपरीत एक विलक्षण तत्व त्रिगुणातीत अपरिणामी चेतन आत्मा है, जो आत्मा व परमात्मा दो रूपों में हैं।

अचेतन में प्रवृत्ति आदि का हेतु कोई अन्य चेतन अधिष्ठाता रहता है। बुद्धि से लेकर स्थूलभूत निमित्त शरीर में प्रवृति का हेतु चेतन अधिष्ठाता जीवात्मा है। शरीर का अधिष्ठाता आत्मा अल्पज्ञ व अल्पशक्ति होने के कारण अखिल प्रकृति का अधिष्ठाता नहीं हो सकता। आत्मा अनेक होने के कारण यह भी सम्भव नहीं कि उनमें कौन सा आत्मा समस्त प्रकृति का अधिष्ठाता परमात्मा है।

भोक्ता स्वयं भोक्ता नहीं हो सकता। उसकी उपयुक्तता व सफलता उसी में है जब इसका कोई भोक्ता हो और वह उससे अलग चेतन हो, जोकि जीवात्मा ही हो सकता है।

दु:ख आदि द्वन्द त्रिगुणात्मक प्रकृति के सम्पर्क से ही होते हैं, इस स्थिति से बच जाना ही कैवल्य है। सम्पर्क से बचने में प्रवृत्त वही हो सकता है जो उससे अलग होगा, वही चेतन आत्मा है।

अब आशंका होती है कि जब परिणत होता हुआ जड़ ऐसी स्थिति में पहुंच जाता है जहाँ उसमें कुछ विशेष विलक्षणता आ जाती है और साधारण जड़ तत्व के समान उसमें व्यवहार नहीं किया जा सकता तब क्यों नहीं उसे ही चेतन कह दिया जाता है?

जड़ परिणामी और चेतन अपरिणामी है तथा कोई भी जड़ वस्तु चेतन रूप में परिणत नहीं होती, अत: दोनों एक नहीं हो सकते।

तो क्या चेतना उसका धर्म है और धर्मी अलग है?

चेतन तत्व त्रिगुणात्मक तत्व से भिन्न निर्गुण है क्योंकि सांख्य में गुण, पद, सत्व, तमस्, रजस् के लिए ही है। इसलिए चेतन में धर्म-धर्मी की कल्पना संभव नहीं है और वह चेतनमात्र है चेतन धर्मी नहीं।

आत्मा चेतनमात्र है यह युक्ति और श्रुति दोनों से सिद्ध है। लोक में जो अन्त:करण को ही आत्मा समझने की प्रतीति है वह अविवेक के कारण है, जो आत्मस्वरूप का साक्षात्कार होने पर प्रत्यक्ष हो जाता है।

आत्मा यदि चेतनमात्र है तो सुपुप्ति आदि अवस्थाएँ क्यों? एक ही अवस्था होनी चाहिए।

आत्मा को बाह्य विषयों का बोध साघन बिना नहीं हो सकता। साघन कभी कार्योन्मुख होते हैं कभी नहीं। सुषुप्ति आदि अवस्था में अन्त:करण की वृत्तिमात्र है सुषुप्ति में सुखानुभूति की प्रतीति जगने पर ही होती है।

आत्मा के नित्य व चेतन सिद्ध हो जाने पर यह निश्चय करें कि आत्मा एक है वा अनेक?

क्रमश ....

1 दिसम्बर - 30 दिसम्बर-2020 मार्गशीर्ष ऋतु- हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
	रोहिणी कृष्ण प्रतिपदा 1 दिसम्बर	मृगशिरा कृष्ण द्वितीया 2 दिसम्बर	आर्द्रा कृष्ण तृतीया 3 दिसम्बर	पुनर्वसु कृष्ण चतुर्थी 4 दिसम्बर	पुष्य कृष्ण पंचमी 5 दिसम्बर	आश्लेषा कृष्ण षष्ठी 6 दिसम्बर
मघा कृष्ण सप्तमी 7 दिसम्बर	पू॰ फाल्गुनी कृष्ण अष्टमी 8 दिसम्बर	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण नवमी 9 दिसम्बर	हस्त कृष्ण दशमी 10 दिसम्बर	चित्रा/स्वाति कृष्ण एकादशी 11 दिसम्बर	विशाखा कृष्ण द्वादशी/ त्रयोदशी 12 दिसम्बर	अनुराधा कृष्ण चतुर्दशी 13 दिसम्बर
ज्येष्ठा कृष्ण अमावस्या 14 दिसम्बर	मूल शुक्ल प्रतिपदा 15 दिसम्बर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल द्वितीया 16 दिसम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल तृतीया 17 दिसम्बर	श्रवण शुक्ल चतुर्थी 18 दिसम्बर	धनिष्ठा शुक्ल पंचमी 19 दिसम्बर	शतभिषा शुक्ल षष्ठी 20 दिसम्बर
पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल सप्तमी 21 दिसम्बर	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल अष्टमी 22 दिसम्बर	रेवती शुक्ल नवमी 23 दिसम्बर	अश्विनी शुक्ल दशमी 24 दिसम्बर	अश्विनी शुक्ल एकादशी 25 दिसम्बर	भरणी शुक्ल द्वादशी 26 दिसम्बर	कृत्तिका शुक्ल त्रयोदशी 27 दिसम्बर
रोहिणी शुक्ल चतुर्दशी 28 दिसम्बर	मृगशिरा शुक्ल चतुर्दशी 29 दिसम्बर	आर्द्रा शुक्ल पूर्णिमा 30 दिसम्बर	रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस 19 दिसम्बर		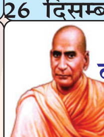 स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 23 दिसम्बर	

31 दिसम्बर - 28 जनवरी-2021 पौष ऋतु- शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
सुभाष जयन्ती 23 जनवरी			पुनर्वसु कृष्ण प्रतिपदा 31 दिसम्बर	पुष्य कृष्ण द्वितीया 1 जनवरी	आश्लेषा कृष्ण तृतीया 2 जनवरी	मघा कृष्ण चतुर्थी 3 जनवरी
पू॰ फाल्गुनी कृष्ण पंचमी /षष्ठी 4 जनवरी	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण सप्तमी 5 जनवरी	हस्त कृष्ण अष्टमी 6 जनवरी	चित्रा कृष्ण नवमी 7 जनवरी	स्वाति कृष्ण दशमी 8 जनवरी	विशाखा कृष्ण एकादशी 9 जनवरी	अनुराधा कृष्ण द्वादशी 10 जनवरी
ज्येष्ठा कृष्ण त्रयोदशी 11 जनवरी	मूल/पूर्वाषाढ़ा कृष्ण चतुर्दशी 12 जनवरी	उत्तराषाढ़ा कृष्ण अमावस्या 13 जनवरी	श्रवण शुक्ल प्रतिपदा 14 जनवरी	धनिष्ठा शुक्ल द्वितीया 15 जनवरी	शतभिषा शुक्ल तृतीया 16 जनवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल चतुर्थी 17 जनवरी
पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल पंचमी 18 जनवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल षष्ठी 19 जनवरी	रेवती शुक्ल सप्तमी 20 जनवरी	अश्विनी शुक्ल अष्टमी 21 जनवरी	भरणी शुक्ल नवमी 22 जनवरी	कृत्तिका शुक्ल दशमी 23 जनवरी	रोहिणी शुक्ल एकादशी 24 जनवरी
मृगशिरा शुक्ल द्वादशी 25 जनवरी	आर्द्रा शुक्ल त्रयोदशी 26 जनवरी	पुनर्वसु शुक्ल चतुर्दशी 27 जनवरी	पुष्य शुक्ल पूर्णिमा 28 जनवरी			स्वतंत्रता दिवस 26 जनवरी

गृहस्थ सम्बन्ध : भाग-१७

- आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर

गृहस्थ आश्रम का आश्रय लेने का कारण संसारिक सुख की कामना है। अत: कुछ सावधानियों के साथ सुखोपभोग की अनुमति दम्पत्ती को दी गई है ताकि गृहस्थ जीवन को जीते हुवे भी यह आश्रम मनुष्य जीवन के प्रमुख उद्देश्य मोक्ष के मार्ग का साधन बना रह सके। इन सावधानियों व दिशा निर्देशों से वैसे तो वैदिक साहित्य भरा पडा है किन्तु कुछ अत्यावश्यक निर्देश दर्शनीय हैं। यथा-

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त ऋते श्रिता:।।
सत्येनावृता: श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता:।।
स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया गुप्ता यज्ञे प्रतिष्ठिता लोको निधनम्।।
ओजश्च तेजश्च सहश्च बलं च वाक् चेन्द्रियं च श्रीश्च धर्मश्च।।

पहले एकबार उपरोक्त के ऋषि कृत अर्थ को लिखते हैं पुन: -

(श्रमेण) हे स्त्रीपुरुषों! मैं ईश्वर तुमको आज्ञा देता हूँ कि तुम सब गृहस्थ मनुष्य लोग परिश्रम तथा प्रणायाम से, संयुक्त वेदविद्या परमात्मा और धनादि से भोगने योग्य धनादि के प्रयत्न में और यथार्थ पक्षपातरहित न्याय रुप धर्म में चलनेहारे सदा बने रहो।

(सत्येन) सत्यभाषणादि कर्मों से चारों ओर से युक्त, शोभा तथा लक्ष्मी से युक्त, कीर्ती और धन से सब ओर से संयुक्त रहा करो।

(स्वधया) अपने ही अन्नादि पदार्थ के धारण से सब के हितकारी, सत्य धारण में श्रद्धा से सब ओर से सब को सत्याचरण प्राप्त करानेहारे, नाना प्रकार के ब्रह्मचर्य सत्यभाषणादि व्रत धारण से सुरक्षित, विद्वानो के सत्कार शिल्पविद्या और शुभगुणों के दान में प्रतिष्ठा को प्राप्त हुआ करो। और इन्हीं कर्मों से इस मनुष्यलोक को प्राप्त होके मृत्युपर्यन्त सदा आनन्द में रहो।

(ओजश्च) हे मनुष्यों! तुम जो पराक्रम और इसकी सामग्री, तेजस्वीपन और इसकी सामग्री, स्तुति-निदा, हानि-लाभ तथा शोकादि का सहन और इसके साधन, बल और इसके साधन, सत्यप्रिय वाणी और इसके अनुकूल व्यवहार, शान्त धर्मयुक्त अन्त:करण और शुद्धात्मा तथा जितेन्द्रियता, लक्ष्मी सम्पत्ति और इसकी प्राप्ति का धर्म युक्त उद्योग, पक्षपातरहित न्यायाचरण वेदोक्त धर्म, और जो इसके साधन वा लक्षण हैं, उनको तुम प्राप्त होके इन्हीं में सदा वर्ता करो। और भी-

बह्म च क्षत्रं च राष्ट्रं च विशश्च त्विषिश्च यशश्च वर्चश्च द्रविणं च।।
आयुश्च रूपं च नाम च कीर्तिश्च प्राणश्चापानश्च चक्षुश्च श्रोत्रं च।।
पयश्च रसश्चान्नं चान्नाद्यं च ऋतं च सत्यं चेष्टं च पूर्तं च प्रजा च पश्वश्च।।

अर्थ- **(ब्रह्म च)** हे गृहस्थादि मनुष्यों! तुमको योग्य है कि पूर्ण विद्यादि शुभ गुण युक्त मनुष्य, और सबके उपकारक शमदमादि गुणयुक्त ब्रह्मकुल, विद्यादि उत्तम गुणयुक्त तथा विनय और शौर्यादि गुणो से युक्त क्षत्रियकुल राज्य और उसका न्याय से पालन, उत्तम प्रजा और उसकी उन्नति, सद्विद्यादि से तेज आरोग्य शरीर और आत्मा के बल से प्रकाशमान और इसकी उन्नति से कीर्तियुक्त तथा इसके साधनों को प्राप्त हुआ करो। पढ़ी हुई विद्या का विचार और उसका नित्य पढ़ना, द्रव्योपार्जन उसकी रक्षा और धर्मयुक्त परोपकार में व्यय करने आदि कर्मों को सदा किया करो।

(आयुश्च) हे स्त्री पुरुषों! तुम अपना जीवन बढाओ और सब जीवन में उत्तम कर्म ही किया करो। विषयासक्ति कुपथ्य रोग और अधर्माचरण को छोडके अपने स्वरूप को अच्छा रखो, और वस्त्राभूषण भी धारण किया करो, नामकरण के प्रमाणे शास्त्रोक्त संज्ञाधारण और उसके नियमों को भी, सत्याचरण से प्रशंसा का धारण और गुणों में दोषारोपण रूप निदा को छोड दो। चिरकाल पर्यन्त जीवन का धारण और उसके युक्ताहार विहारादि साधन, सब दु:ख दूर करने का उपाय और उसकी सामग्री, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द प्रमाण और उसकी सामग्री को धारण किया करो।

(पयश्च) हे गृहस्थ लोगों! उत्तम जल, दूध और इसका शोधन व युक्ति से सेवन, घृत, दूध, मधु आदि और इसका युक्ति से आहार-विहार, उत्तम चावल आदि अन्न और उसके साथ उत्तम दाल, शाक, कढ़ी आदि, सत्य मानना और सत्य मनवाना, सत्य बोलना और सत्य बुलवाना, यज्ञ करना और कराना, यज्ञ की सामग्री पूरी करना तथा जलाशय और आराम वाटिका आदि का बनाना और बनवाना, प्रजा की उत्पत्ति पालन और उन्नति सदा करनी तथा करानी, गाय आदि पशुओं का पालन और उन्नति सदा करनी तथा करानी चाहिये।

इसका विवेचन हम पहले ही कर चुके हैं कि समाज में जब तक स्व नियन्त्रण को स्वीकार नहीं किया जायेगा तब तक संसार में शान्ति स्थापना सपना ही रहेगा। यदि इसे यथार्थ के धरातल पर उतारना है तो ईश्वरीय नियमो का पालन स्वयं करना व कराना ही होगा। हम सुखोपभोग और उसकी सामग्री को प्राप्त करें यह सभी चाहते हैं सभी को यह प्राप्त भी होना चाहिये किन्तु जब तक विद्या ना हो और उसके अनुकूल परिश्रम करने और कष्ट सहने को तैयार न हों तो यह सब प्राप्त नहीं हुआ करता। मान लीजिए यह सब प्राप्त हो भी जावे और समाज ईश्वर की आज्ञानुसार यथार्थ पक्षपातरहित न्यायरूप धर्म में नहीं वर्तता है तो झगड़े, लूटमार आदि से अशान्ति फैलकर सुखों का नाश ही होगा। शोभा, लक्ष्मी धन तथा कीर्ति कौन नहीं चाहता? अर्थात् सभी चाहते हैं किन्तु बिना सत्यभाषणादि कर्मों से युक्त हुवे यदि यह प्राप्त हुआ भी तो स्थिर नहीं हो सकेगा और पुन: दु:ख का कारण बनेगा।

उपरोक्त भावना से ही निर्देश मिला कि हे गृहस्थों! आपके अपने ही उपार्जित पदार्थ जो आपने धारण किये हैं उन्हीं से सबका हित करना है। समाज में ऐसे भी अनेकों उदाहरण देखने को मिलते हैं जब कोई महारथी परोपकार करना चाहता है और वह करता भी है वह इतना उदार होता है कि अपने सामर्थ्य से कहीं अधिक धन देकर भी पीड़ितों या आवश्यकता वालों की सहायता करता है किन्तु जिस धन से यह सहायता करता है वह इसका होता ही नहीं है यह तो इसकी टोपी उसके सिर रखके ही उपकार मे व्यस्त रहता है। जब तक इसका रहस्य खुलता है यह अनेक सहृदय लोगों को फँसा चुका होता है और इसके परिणाम स्वरूप लपेटे में आने वाले लोग भविष्य में भी किसी की सहायता नहीं कर पाते। अत: उपकार स्वयं के धन से ही करना उचित है। ईश्वर की आज्ञा है कि हमें श्रद्धावान होना चाहिए। इससे पूर्व कि हम इस आज्ञा के प्रयोजन को समझें हमें श्रद्धा को समझना आवश्यक है। आज लोगों में श्रद्धा एक ऐसी भावना है जो जख्मी शेरनी के जैसी है, जब किसी की श्रद्धा पर चोट पड़ती है, यदि उसमें सामर्थ्य है तो वह सरकारी सम्पत्ती की हानि से लेकर धरना-प्रदर्शन दंगे आदि कुछ भी कर सकता है। संसार भर में यह श्रद्धालु मरने मारने को तो तैयार रहता ही है साथ ही यही सबसे अधिक व सबसे आसानी से लूटा भी जाता है। विभिन्न गुरुघण्टालों के डेरों और आश्रमों में अपने कारणों से घूमने वाली भीड़ भी आज श्रद्धालु कहलाती है। किन्तु ऋषियों के मत और अपने मूलार्थ में यह श्रद्धा बडा ही पवित्र और आवश्यक साधन है क्योंकि यह सत्य को धारण करने की इच्छा अथवा सत्यापदेष्टाओं के प्रति सम्मान का नाम है और यह मानव सभ्यता की उन्नति के सर्वप्रमुख कारकों मूं से एक है। यही इसका प्रयोजन भी है।

क्रमश ....

गौकरुणानिधिः - गौ आदि पशुओं की रक्षा के लिये ऋषि का संदेश

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर गायादि पशुओं की रक्षा व उपयोगिता के लिए गौकरुणानिधि जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि ने इस पुस्तक में गायादि पशुओं के पूरे अर्थशास्त्र को, उनकी उपयोगिता को दर्शाया है तथा समीक्षा भाग में मांसाहार व मद्यपान आदि की निस्सारता व हानियों को दर्शाया है। वहीं दूसरी ओर नियमादि देकर कृषि तथा पशुओं की उन्नति का मार्ग प्रदर्शित किया है।

यहाँ प्रस्तुत है गौकरुणानिधि पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार गायादि पशुओं की रक्षा करते हैं, उनका उपयोग लेते हैं तो न केवल पूरे राष्ट्र को अपितु एक एक व्यक्ति व एक एक परिवार स्मृद्धि को प्राप्त हो सकता है। यही मार्ग हमारी आर्थिक उन्नति का मूल है तथा इसको अपनाकर हम पाप से भी बच सकते हैं।

गतांक से आगे ...

सुनो बन्धुवर्गो! तुम्हारा तन, मन, धन, गाय आदि की रक्षारूप परोपकार में न लगे, तो किस काम का है? देखो, परमात्मा का स्वभाव कि जिसने सब विश्व और सब पदार्थ परोपकार ही के लिए रच रखे हैं, वैसे तुम भी अपना तन, मन, धन परोपकार ही के लिए अर्पण करो।

बड़े आश्चर्य की बात है कि पशुओं को पीड़ा न होने के लिए न्यायपुस्तक में व्यवस्था भी लिखी है कि जो पशु दुर्बल और रोगी हों, उनको कष्ट न दिया जावे। और जितना बोझ सुखपूर्वक उठा सकें, उतना ही उन पर धरा जावे। श्रीमती राजराजेश्वरी श्री विक्टोरिया महारानी का विज्ञापन भी प्रसिद्ध है कि इन अव्यक्तवाणी पशुओं को जो-जो दुःख दिया जाता हैं, वह-वह न दिया जावें। जो यही बात है कि पशुओं को दुःख न दिया जावे, तो क्या भला मार डालने से अधिक कोई दुःख होता है ? क्या फाँसी से अधिक दुःख बन्दीगृह में होता है ? जिस किसी अपराधी से पूछा जाए कि तू फाँसी चढ़ने में प्रसन्न है, व बन्दीघर के रहने में, तो वह स्पष्ट कहेगा कि फाँसी में नहीं, किन्तु बन्दीघर में रहने में ।

और जो कोई मनुष्य भोजन करने को उपस्थित हो, उसके आगे भोजन के पदार्थ उठा लिये जावें, और उसको वहाँ से दूर किया जावे, तो क्या वह सुख मानेगा ? ऐसे ही आजकल के समय में कोई गाय आदि पशु सरकारी जंगल में जाकर घास और पत्ता जो कि उन्हीं के भोजनार्थ हैं, विना महसूल दिये खावें, वा खाने को जावें, तो बेचारे पशुओं और उनके स्वामियों की दुर्दशा होती है। जंगल मे आग लग जावे तो कोई चिन्ता नहीं, किन्तु वे पशु न खाने पावें । हम कहते हैं कि किसी अति क्षुधातुर राजा या राजपुरुष के सामने आये चावल आदि या डबलरोटी आदि छीनकर न खाने देवें और उनकी दुर्दशा हो जावे तो जैसा दुःख इनको विदित होगा क्या वैसा ही उन पशु, पक्षिओं और उनके स्वामियों को न होता होगा ?

ध्यान देकर सुनिए, कि जैसा दुःख-सुख अपने को होता है, वैसा ही औरों को भी समझा कीजिए। और यह भी ध्यान में रखिए कि वे पशु आदि, और उनके स्वामी तथा खेती आदि कर्म करनेवाले प्रजा के पशु आदि और मनुष्यों के अधिक पुरुषार्थ ही से राजा का ऐश्वर्य अधिक बढ़ता और न्यून से नष्ट हो जाता है। इसीलिए राजा प्रजा से कर लेता है कि उनकी रक्षा यथावत् करे। न कि राजा और प्रजा के जो सुख के कारण गाय आदि पशु हैं उनका नाश किया जावे।

इसलिए आज तक जो हुआ सो हुआ। आगे आँखें खोलकर सबके हानिकारक कर्मों को न कीजिए, और न करने दीजिए। हाँ, हम लोगों का यही काम है कि आप लोगों को भलाई और बुराई के कामों जता देवें, और आप लोगों का यही काम है कि पक्षपात छोड़ सबकी रक्षा और बढ़ती करने में तत्पर रहें।

सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर हम और आप पर पूर्ण कृपा करे, कि जिससे हम और आप लोग विश्व के हानिकारक कर्मों को छोड़ सर्वोपकारक कामों को करके सब लोग आनन्द में रहें। इन सब बातों को सुन मत डालना, किन्तु सुन रखना। इन अनाथ पशुओं के प्राणों को शीघ्र बचाना। हे महाराजाधिराज जगदीश्वर ! जो इनको कोई न बचावे, तो आप इनकी रक्षा करने और हमसे कराने में शीघ्र उद्यत हूजिए।।

॥ इति समीक्षा-प्रकरणम् ॥

२. इस सभा के नियम

१.-सब विश्व को विविध सुख पहुँचाना, इस सभा का मुख्य उद्देश्य है। किसी को हानि पहुँचाना प्रयोजन नहीं।

२.-जो-जो पदार्थ सृष्टिक्रमानुकूल जिस-जिस प्रकार से अधिक उपकार में आवे, उस-उससे आप्ताभिप्रायानुसार यथायोग्य सर्वहित सिद्ध करना, इस सभा का परम पुरुषार्थ है।

३.-जिस-जिस कर्म से बहुत हानि और थोड़ा लाभ हो, उस-उस को सभा कर्त्तव्य नहीं समझती ।

४.-जो-जो मनुष्य इस परमहितकारी कार्य में तन-मन-धन से प्रयत्न और सहायता करे, वह-वह इस सभा में प्रतिष्ठा के योग्य होवे।

क्रमश ....

संध्या काल

मार्गशीष-मास, हेमन्त-ऋतु, कलि-5121, वि. 2077
(01 दिसम्बर 2020 से 30 दिसम्बर 2020)
प्रातः कालः 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 A.M.)
सांय कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 P.M.)

पौष-मास, शिशिर-ऋतु, कलि-5121, वि. 2077
(31 दिसम्बर 2020 से 28 जनवरी 2021)
प्रातः कालः 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 A.M.)
सांय कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 P.M.)

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

आर्य समाज के विचारों को वृहद् रूप से सुनने-समझने का अवसर मिला। अन्य धर्म-ग्रन्थों व आर्य धर्मग्रन्थ में तुलना करने पर वेदों के अध्ययन हेतु प्रेरणा मिली। सत्यार्थ प्रकाश वेदों की ओर रूचि व जिज्ञासा बहाकर प्रेरित करेगा ऐसा बोध कराया गया। ईश्वर को परखने की कसौटी मिली तथा अन्धविश्वासों व जड़ताओं को दूर करने का संकल्प प्राप्त हुआ। अपने आर्य, वेदाचारी पूर्वजों की विशेषताओं, क्षमताओं व उपलब्धियों का तथा उनका कारण बोध हुआ। देश समाज के प्रति कर्तव्यों का पता चलने पर उपरोक्त को करने के लिए प्रेरणा प्राप्त हुई। मूर्ति-पूजा अन्य कुरीतियों तथा अन्धभक्ति से बचने व छोड़ने की प्रेरणा मिली।

राष्ट्र निर्माण, राष्ट्र रक्षा, राष्ट्रचिन्ता करने लायक बुद्धि प्राप्त हुई। वेद को मानने समझने से ही उसके सिद्धान्तों पर चला जा सकता है तथा श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि पूर्वज क्यों आज समाज के प्रेरक है? कारण वैदिक सिद्धान्तों पर चलना था। परिवार को आर्य बनाने की प्रेरणा के साथ अनुभव हर्ष से रहा।

नाम : नवनीत आर्य, आयु : ४५ वर्ष, योग्यता : परास्नातक, कार्य : अध्यापक, पता : बशीरपुर, नजीबाबाद, बिजनौर।

सत्र करने के पश्चात मेरी भ्रान्तियाँ जो ईश्वर के सम्बन्ध में थी वह दूर हो गयी हैं। राष्ट्र के प्रति मेरा क्या कर्तव्य है? भूत-प्रेत आदि के बारे में जो भ्रान्तियाँ थी वह दूर हुई हैं। अपने कर्तव्यों के प्रति सजग एवं उनका सही निर्वहन कैसे करें यह जाना।

नाम : पंकज कुमार चिकारा, आयु : ४२ वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्य : नौकरी, पता : गांधीनगर, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.।

श्रीमान् आचार्य महोदय, मैंने आर्य समाज के द्विदिवसीय सत्र में ईश्वर के प्रति आस्था, सच्चे मार्ग पर चलने प्रतिफल, दुर्गुण, दुर्व्यसनों से बचना, धर्म के प्रति आस्था, धर्म के मार्ग से हटकर चलने में क्या-क्या हानि होती है, कार्य जो उत्तम है उन्हें करना तथा बुरे कार्यों को कैसे छोड़ा जाये और अन्य लोगों को कैसे आर्य बनाया जाये तथा स्वयं भी आर्य पथ पर चलकर राष्ट्र की रक्षा और उन्नति को कैसे किया जाये आदि बहुत-सी बातों को सीखा है जो किसी भी मनुष्य का जीवन बदल सकती हैं, ऐसी बातों को सीखा है।

नाम : जयविन्द्र गिरि, आयु : ४० वर्ष, योग्यता : एम.ए.एल.एल.एम., कार्य : कृषि, पता : काकड़ा मुजफ्फरनगर, उ.प्र.।

बहुत अधिक जानकारी भरा व वास्तविकता को दर्शन व जगाने वाला सत्र रहा। अभी तक आर्यों के विषय में ऐसे ही कुछ-कुछ पता था किन्तु सटीकता नहीं थी। आचार्य जी का समझाने का तरीका अति प्रभावशाली व ऊर्जावान है। ऐसे ही आचार्यों की हमारे देश को आवश्यकता है। मेरा प्रयास इस अभियान को और अधिक गति, आधार, ऊर्जा, एवं सम्मान दिलाने में रहेगा ताकि मनुष्य एवं देश-दुनिया को अज्ञानता से ज्ञान की ओर लगाया जा सके। उपासना के द्वारा ध्यान व समाधि की भी सही जानकारी हुई है। स्वध्याय की तरफ भी अध्ययन आकर्षित हुआ है।

ऐसी ही धर्म सभाओं की संख्या व संरक्षण को बढ़ाने में सहयोग सदैव रहेगा।

नाम : अवनीश त्यागी, आयु : ४३ वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्य : स्वरोजगार, पता : रूड़की, हरिद्वार।

मैं दिनांक 28 नवम्बर एवं 29 नवम्बर को एच.एस.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के सभागार में पूज्य आचार्य जी के द्वारा बहुत ही सरल भाषा में वैदिक धर्म के बारे में विस्तार से चर्चा सुना। यह चर्चा इस धरती पर रहने वाले सम्पूर्ण मानव मात्र से सम्बन्धित था। अगर सम्पूर्ण मानव वेद के मार्ग पर चले तो यह धरती स्वर्ग बन सकता है, आपसी वैमनस्यता की भावना समाप्त हो सकती है तथा सभी लोग मिल-जुलकर प्रेमपूर्वक अपना जीवन यापन कर सकते हैं। मैं हमेशा वैदिक मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा करता हूँ।

अगर भविष्य में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा का कहीं सत्र आयोजन होता है तो उस सत्र में अपने स्तर से मैं अन्य लोगों के साथ उपस्थित रहूँगा तथा सत्र के सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लूँगा।

नाम : अजय कुमार आर्य, आयु : 36 वर्ष, योग्यता : स्नातकोत्तर, कार्य : अध्यक्ष, पता : पचरूसिया, गौनाहा, बिहार।

यहाँ पर आकर मैंने आर्य धर्म के बारे में जाना है। और यहाँ पर वेद के बारे में जाना है? यहाँ पर मैंने हमारे देश के बारे में और उसकी विषम परिस्थियों के बारे में जाना है। आर्य धर्म के बारे में जानकर मुझे अच्छा लगा आर्य धर्म वेद के अनुसार चलता है। यहाँ से मुझे प्रेरणा मिली कि हिन्दु जनता को जागरूक रखना है। जाति-भांति के नियम को तोड़कर आगे चलना है यही हमारा कर्त्तव्य है।

हमे अपने वेदों के बारे में जानकारी होनी चाहिए और आर्यों के समाज से जुड़ना चाहते है।

नाम : चन्द्रभान सिंह मिश्रा, आयु : 30 वर्ष, योग्यता : 10, कार्य : मजदूरी, पता : उमरपुर टाँडा, बिजनौर।

अनुभव कुछ शब्दों में बयां करना उतना ही मुश्किल है जितना अनुभव को पूरी तरह समझना। परन्तु इन दो दिनों में जो बुद्धि का विकास हुआ वैसा कभी कल्पना भी नहीं किया था। आचार्य जी एवं सभी आर्य समाज के आर्यो में सच्चाई को बुद्धि द्वारा समझने और सोचने पर मजबूर किया। ये मेरा सौभाग्य है कि मुझे वेदों, आर्य, वैदिक और अन्य कई विषय के बारे में जानने का अवसर प्राप्त हुआ। बहुत-बहुत आभारी।

नाम : अनुराग त्यागी, आयु : 23 वर्ष, योग्यता : बी.एस.सी., पता : धामपुर, बिजनौर।

इस सत्र को करने से मेरे मन में जो भाव आते रहते थे वे भाव इस सत्र को करने से पूरे होते दिखाई दे रहे है। मैं पिछले कई वर्षो से यही सोचता था कि हम हिन्दू आपस में लड़े हैं। एक दिन मुसलमान हमारी जातिको नष्ट करने के लिए विभिन्न कार्य करते चले आ रहे हैं। मैं रूड़की रहता था तो वहाँ पर कैराना से आये कई हिन्दू परिवारों से मिला तो वे हिन्दू परिवार कैराना से मुसलमानों से परेशान होकर वहाँ से रूड़की आकर बस गये। मेरा अनुभव है कि अभी तक यदि हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी ना होते हो अब तक ये मुसलमान लोग हम हिन्दूओं काटने मारने लगते।

हमें मजबूरी में मरना पडेगा या फिर धर्म परिवर्तन करना पड़ेगा।

नाम : महावीर, आयु : 37 वर्ष, योग्यता : बी.टेक, कार्य : कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर , पता : खानपुर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।